Dr.Uttam Kumar

S.R.A.P College,Barachakia
Mob.No.8210561032

Session -2023-27

Faculty - Commerce

Class-Second Semester

Subject -Business Organisation

भारत में व्यवसाय का महत्व अथवा लाभ
(IMPORTANCE OR ADVANTAGES OF BUSINESS IN INDIA)

भारत एक विकासशील राष्ट्र है। इसके सम्बन्ध में कहा जाता है कि, "**भारत एक धनिक राष्ट्र है जहाँ पर गरीब लोग निवास करते हैं।**" इस कथन का आशय यह है कि भारत में प्रचुर मात्रा में प्राकृतिक साधन उपलब्ध है, किन्तु समस्या यह है कि किस प्रकार उनका देश के हित में विदोहन किया जाय ? इसलिए अन्य देशों की भाँति हमारी सरकार को भी योजनाओं का सहारा लेना पड़ा। बारहवीं योजना के अन्तर्गत राजकीय क्षेत्र में कई वृहत उद्योगों की स्थापना की गई। वर्तमान में इन योजनाओं ने नीति आयोग का रूप ले लिया है। हर सम्भव तरीके से देश के व्यवसाय एवं उद्योगों का विकास किया जा रहा है, ताकि भारत में निर्धनता, रोग, अज्ञानता, गन्दगी और बेकारी जैसे दानवों का सदैव के लिए विनाश हो जाय। इसके लिए व्यावसायिक संगठन की आवश्यकता है, अर्थात् आर्थिक क्षेत्र में प्रगति करने के लिए प्रत्येक व्यावसायिक क्रिया पूर्ण रूप से 'संगठित' होनी चाहिए। किसी भी उद्योग को लीजिये, जब तक कि उत्पादन की प्रत्येक क्रिया पूर्णरूप से संगठित न हो तब तक सफल उत्पादन की कामना करना व्यर्थ है। संक्षेप में, भारत की आर्थिक प्रगति 'सफल व्यावसायिक क्रिया' में निहित है। यही कारण है कि भारत में प्रत्येक वाणिज्य के विद्यार्थी को अनिवार्य विषय के रूप में इस विषय का अध्ययन करना पड़ता है। अध्ययन में सुविधा की दृष्टि से भारत में व्यवसाय के महत्व का अध्ययन निम्न शीर्षकों के अन्तर्गत किया जा सकता है—

(1) **प्राकृतिक संसाधनों का विदोहन करने के लिए**—यह दुर्भाग्य का विषय है कि देश में अपार प्राकृतिक संसाधनों के होते हुए भी हमारा देश विश्व के विकसित देशों की तुलना में पिछड़ा हुआ है। आज भारत में विश्व का अधिकांश लोहे का भाग दबा हुआ है। देश की 2.74 लाख वर्ग मील भूमि पर वन आच्छादित है। 130 करोड़ जनसंख्या वाला यह देश (सन् 2018) में अपनी अपार मानव शक्ति का सदुपयोग करने में असमर्थ है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि विदेशियों ने हमारे प्राकृतिक साधनों का उपयोग देश के हित में न करके अपने हित में ही किया तथा मनमाने ढंग से इनका विनाश किया। अत: आज आवश्यकता इस बात की है कि देश की प्राकृतिक सम्पदा का उपयोग कुशल व्यावसायिक क्रिया के माध्यम से देश के सार्वजनिक विकास करने में किया जाय।

(2) **औद्योगिक विकास की गति में तीव्रता**—भारत सरकार के नवीन आर्थिक कार्यक्रमों के परिणामस्वरूप देश के आर्थिक विकास को निश्चित रूप में नई गति मिलती है। किन्तु फिर भी आज ऐसे अनेक उद्योग हैं जो अपनी स्थापित क्षमता का पूरा उपयोग नहीं कर पा रहे हैं, जैसे—जूट उद्योग, सूती वस्त्र उद्योग, इस्पात उद्योग आदि। यदि लागत को कम करना है तो उत्पादन-क्षमता का अधिकतम उपयोग करना होगा। ऐसा केवल कुशल व्यावसायिक क्रिया द्वारा ही किया जा सकता है।

(3) **वस्तुओं एवं सेवाओं का कुशलतापूर्वक उत्पादन करना**—भारत में व्यावसायिक क्रियाओं के माध्यम से वस्तुओं एवं सेवाओं का कुशलतापूर्वक उत्पादन किया जा सकता है। [illegible] वस्तुओं का कुशलतापूर्वक उत्पादन करने में सहायक है।

(4) **निजीकरण की सफलता**—भारत ने अपने आर्थिक विकास के लिए आर्थिक निजीकरण का सहारा लिया है। देश में [illegible] लागू हो चुका है। [illegible] एवं [illegible] योजनाओं में से [illegible] चुका है। इस समय देश में कुशल व्यावसायिक क्रियाओं का [illegible] है। [illegible] योजनाओं की सफलता के लिए यह नितान्त आवश्यक है कि देश में [illegible] इस दिशा में कुछ महत्वपूर्ण कदम उठाये हैं, किन्तु अभी [illegible] देरी होगी।

(5) **उपभोक्ता वस्तुओं के मूल्यों में कमी एवं सुगम उपलब्धता**—भारतीय व्यवसायियों की दूषित मनोवृत्ति के कारण देश में उपभोक्ता वस्तुओं के मूल्य दिन-प्रतिदिन बढ़ते जा रहे हैं एवं उनका देश में कृत्रिम अभाव उत्पन्न हो गया है। देश में उपभोक्ता वस्तुओं के मूल्य में कमी लाने तथा उनकी सुगम उपलब्धता हेतु कुशल व्यावसायिक क्रियाओं एवं इनके सिद्धान्तों का प्रभावी ढंग से पालन किया जाना चाहिए।

(6) **प्रजातान्त्रिक समाजवाद की नीति के अनुरूप विकास**—भारत ने प्रजातान्त्रिक समाजवाद का सहारा लिया है। इस ध्येय की पूर्ति में आधुनिक व्यावसायिक क्रियाओं के सिद्धान्त, जोकि वैज्ञानिक प्रबन्ध, विवेकीकरण, विकेन्द्रीकरण तथा व्यवसाय के सामाजिक उत्तरदायित्व पर बल देते हैं, बड़े सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

(7) **गरीबी का उन्मूलन**—स्वतन्त्रता प्राप्ति के 7 दशक समाप्त होने के बाद भी आज देश की अधिकांश जनसंख्या निर्धनता की रेखा से नीचे जीवन-यापन कर रही है। इस गरीबी से मुक्ति पाने के लिए भारत में कुशल व्यावसायिक क्रियाओं की सबसे अधिक आवश्यकता है।

(8) **रोजगार के साधनों का विकास**—आज बेरोजगारी की समस्या भारत की सबसे प्रमुख एवं गम्भीर समस्या है। यह देश के आर्थिक विकास में सबसे पहले बाधक है। भारत में अभी तक लगभग 17% जनसंख्या ही वाणिज्य एवं उद्योगों में संलग्न है। अतः भारत के व्यवसाय, वाणिज्य तथा औद्योगिक क्षेत्र में रोजगार के साधनों के विकास हेतु व्यापक क्षेत्र विद्यमान है। केवल आवश्यकता इस बात की है कि कुशल व्यावसायिक क्रियाओं के माध्यम से भारत के व्यावसायिक, वाणिज्यिक तथा औद्योगिक क्षेत्र का विस्तार किया जाय। **श्री मैकअलराय** के शब्दों में, ''व्यावसायिक संगठन मनुष्य की रचनात्मक शक्तियों को लगाने का महत्वपूर्ण साधन है।''

(9) **जन-साधारण के जीवन-स्तर में वृद्धि करना—व्हीलर** के अनुसार, ''व्यवसाय उच्च जीवन-स्तर तथा आर्थिक-शक्ति प्रदान करता है।'' हमारे देश के जन-साधारण का जीवन-स्तर अन्य देशों (रूस, जापान, जर्मनी, ब्रिटेन, फ्रांस आदि) की तुलना में बहुत नीचा है। कुशल व्यावसायिक क्रियाओं के माध्यम से अधिक रोजगार, अधिक उत्पादन, अधिक मजदूरी तथा प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि की जा सकती है।

(10) **राष्ट्रीय समृद्धि में योगदान**—व्यावसायिक क्रियाओं का महत्व इस कारण भी अधिक है कि यह देश के साधनों का अधिकतम उपयोग करके तथा सरकारी योजनाओं में अपना योगदान देकर राष्ट्र की उन्नति की ओर अग्रसर करके राष्ट्रीय समृद्धि में योगदान देता है।

(11) **पूँजी का निर्माण**—औद्योगिक विकास की गति में तीव्रता लाने, रोजगार के साधनों का विकास करने, गरीबी का उन्मूलन करने तथा जन-साधारण का जीवन-स्तर ऊँचा उठाने आदि के लिए विशाल मात्रा में पूँजी की आवश्यकता होती है जिसका कि भारत में अभाव है। भारत के बारे में कहा जाता है कि यहाँ की पूँजी शर्मीली है जो या तो जमीन के नीचे रहते है अथवा तालों में बन्द पड़ी रहती है। अतः हमें यहाँ से उसे निकालना होगा साथ ही हमें पूँजी का निर्माण भी करना होगा। कुशल व्यावसायिक संगठन विनियोजकों को उचित दर से लाभांश का वितरण कर अधिकाधिक विनियोगों को प्रोत्साहित कर सकता है।